

---

Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 5 Shivarchane  
Gocharanusarapujopadesham

---

ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि ५ शिवार्चने  
गोचरानुसारपूजोपदेशम्

---

Document Information

---



---

Text title : Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 5 Shivarchane Gocharanusarapujopadesham

File name : shivapUjAsAdhanAni5shivArchanegocharAnusArapUjopadesham.itx

Category : shiva, shivarahasya, pUjA, pUjA, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 26

kumbhaghoNamahimAnuvarNanam | 229-237||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 17, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 5 Shivarchane  
Gocharanusarapujapadesham

---

ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि प शिवार्चने  
गोयरानुसारपूजोपदेशम्

---



(शिवरुद्रस्थान्तर्गते उग्राख्ये)

अगस्त्यः (उवाच)

मीनकर्कटयोर्मध्ये जलधारां मधेश्वरे ।

यः कल्पयेदविच्छिन्नां स मोक्षमधिगच्छति ॥ २२८ ॥

शिवं मकरसङ्कान्तौ दृग्धाद्यैः प्रस्थसम्मितैः ।

अभिषिष्य प्रयत्नेन शुद्धैरपि जलैर्नवैः ॥ २३० ॥

भस्म भिल्वादिभिः सम्यक् पूजयित्वा मधेश्वरम् ।

सङ्कल्पपूर्वं यत्नेन नैवेद्यं तु प्रकल्पयेत् ॥ २३१ ॥

शतप्रस्थमितः कृष्णैः श्वेतैर्वा क्षालितैस्तिवैः ।

पूजनीयस्ततो भक्त्या लिङ्गरूपी सदाशिवः ॥ २३२ ॥

सिद्धमादिष्वपि सङ्कान्तिष्वेवमेव सदाशिवः ।

पूजनीयो मडादेवो विषुवेष्वयनेष्वपि ॥ २३३ ॥

युगादिष्वपि सम्पूज्यो मन्वादिष्वपि शङ्करः ।

अेवमेव शिवः पूज्यो ग्राहणे यन्द्रसूर्ययोः ॥ २३४ ॥

अेवं यः कुरुते भक्त्या लिङ्गपूजां मधेश्वरे ।

स मडापातकेभ्योऽपि मुच्यते नात्र संशयः ॥ २३५ ॥

तिवैः पूजां प्रयत्नेन स्वस्वाञ्जलिमितैः सदा ।

यः करोति स पापेभ्यः सर्वेभ्योऽपि विमुच्यते ॥ २३६ ॥

अेवमेव मडादेवं यो नित्यं श्वेतसर्षपैः ।

भक्त्या सम्पूजयेद्धिप्रः स पापेभ्यो विमुच्यते ॥ २३७ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि प - शिवार्चने गोचरानुसारपूजोपदेशं सम्पूर्णात् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राप्यः सप्तमांशः । अध्यायः २६ कुम्भघोषामडिमानुवर्णनम् । २२८-२३७ ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 26 kumbhaghonamahimanuvarNa . 229-237..

Notes:


Rṣi Agastya ऋषि अगस्त्य; after delivering Upadeśa उपदेश (to Dvija द्विज) about offering of the Ghṛtakambalam घृतकम्बलम् with respect to worship of Śiva शिव, continues to outline the offerings in accordance with Astronomical/Celestial Transits and Alignments. These include Mīnakarkaṭayormadhye mInakarkaTayormadhye (Solar Transit between Pisces and Cancer); Makara Saṅkrānti मकर सङ्क्रान्ति; Siṃha etc. Saṅkrānti-s सिंहादि सङ्क्रान्तयः; Viṣuva विषुव (Equinoxes) and Grahaṇa ग्रहण (Eclipses).


Ghṛtakambalam घृतकम्बलम् offering was previously specified for Māgha māsa माघ मास at night of commencement of Māgha Pūrṇimā माघ पूर्णिमा; and finds a detailed mention in the Adhyāyaḥ 26 अध्यायः २६ of ŚivaRahasyam Saptamānśaḥ शिवरहस्यम् सप्तमांशः and in the Kāmika Āgama कामिक आगम.

The Adhyāyaḥ 26 अध्यायः २६ of ŚivaRahasyam Saptamānśaḥ शिवरहस्यम् सप्तमांशः has several other details about Śivapūjāsādhānāni शिवपूजासाधनानि.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 5 Shivarchane Gocharanusarapujopadesham*  
pdf was typeset on June 17, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

